ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 503-504

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नर्सिंग व्यवसाय में प्रशिक्षण का महत्व

मिनु मिन्ज
एम0ए0, पी0–एच0डी0,समाजशास्त्र, ग्राम–धुथिया, पो0–पांडेय परसवाँ, जिला–गया (बिहार) भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 10.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : ***नर्सिंग विद्यालयों का अप्रत्यक्ष प्रभाव नर्सों के अपने व्यवसाय के प्रति आत्मीयता एवं निष्ठा पर पड़ता है। नर्सों की द्वन्द्वात्मक भूमिका प्रतिपादन के मौलिक कारकों को जानने में वृहद ऐतिहासिक परिवर्तन को जानना आवश्यक है, परन्तु यह सम्भव है कि उन विशिष्ट शक्तियों को समझा जाए जो उनके विभिन्न भूमिका सम्प्रत्यय को नर्सों को समझने के लिए बाध्य करती है। इस भूमिका सम्प्रत्यय को समझाने में नर्सिंग विद्यालयों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालयों में ही नर्सों को भी इस बात से अवगत कराया जाता है कि उन्हें अपने कार्य के प्रति प्रचलित चित्रकल्प एवं चिकित्सालय की माँग के बीच जो असंगति है उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए परन्तु इस अभियोजन के अन्तर्गत विभिन्न अंशों में भ्रम का समावेश होता है।***

कुंजीभूत शब्द– अप्रत्यक्ष, व्यवसाय, आत्मीयता, द्वन्द्वात्मक, प्रतिपादन, सम्प्रत्यय, चिकित्सालय, असंगति, अभियोजन।

नर्सों की प्रशिक्षण योजना प्रमुख रूप से तीन प्रकार की होती है :–

(क) तीन वर्षीय चिकित्सालय द्वारा संचालित विद्यालय।
(ख) चार वर्षीय महाविद्यालय विषयक विद्यालय।
(ग) दो वर्षीय महाविद्यालय विषयक विद्यालय।

चिकित्सालय योजना में तीन वर्ष के अन्त में नर्सिंग में डिप्लोमा प्रदान की जाती है तथा विशिष्ट नर्सिं पाठ्यक्रम के अन्तर्गत गहन कार्यक्रम प्रदान करते हुए प्रेक्टिकल प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। चिकित्सालय एवं चार वर्षीय नर्सिंग प्रशिक्षण के अन्तर्गत विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि की लड़कियाँ आती हैं। मध्यम एवं उच्च वर्ग की लड़कियाँ निम्न वर्ग की लड़कियों की अपेक्षा.त अपने प्रशिक्षण को पूरा कर लेती हैं। नर्सिंग के डिग्री प्रशिक्षण के अन्तर्गत डिप्लोमा प्रशिक्षण की अपेक्षा लड़कियाँ अधिक आकर्षित होती हैं जो अपनी भूमिका प्रतिपादन के प्रति निष्ठा भी व्यक्त करती हैं।

ऐसा देखा गया है कि चिकित्सालय योजना के अन्तर्गत नर्सों को जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह डिप्लोमा प्रशिक्षण होते हुए भी डिग्री प्रशिक्षण की अपेक्षा.त महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि डिप्लोमा प्रशिक्षण के अन्तर्गत नर्सों को चिकित्सालय में कार्य करने की पर्याप्त सुविधा मिलती है जिससे नर्सों के अनुभव में उत्तरोत्तर विकास होता है। नर्सिंग के डिग्री प्रशिक्षण के अन्तर्गत नर्सों को शैक्षिक एवं प्रेक्टिकल स्तर पर पूर्ण रूप से दक्ष करने का प्रयास किया जाता है। यही कारण है। कि नर्सिंग के डिप्लोमा प्रशिक्षण की तुलना में डिग्री प्रशिक्षण वाली नर्सों को अधिक सर्जनात्मक 'कम आश्रित एवं दक्ष' प्रस्तुत कार्य करने के ढंग से असन्तुष्ट 'सत्ता एवं अधिकार का प्रश्न' चिकित्सालय के नियमों एवं नर्सिंग पद्धतियों के प्रति अधिक आलोचनात्मक .ष्टिकोण रखना स्वयं निर्णय लेने की योग्यता में विकास–अधिक वैवयिक होना 'नर्सिंग के वृहद कार्य क्षेत्र की अपेक्षा' आदि गुणों से युक्त माना जाता है ।

महिलाएँ जो नर्सिंग विद्यालयों में प्रवेश करती हैं रोगियों, चिकित्सालय एवं विश्व के प्रति अपना नवीन दृष्टिकोण रखती है। प्रशिक्षण समाप्त करने के उपरान्त कुछ नर्सें अपने इस दृष्टिकोण को कायम रखती है परन्तु अधिकांश का उपर्युक्त विचार संवेगात्मक होता है। नर्सिंग विद्यालयों में प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों में अपने व्यवसाय के प्रति रोगात्मक उन्मेष एवं निष्ठा होती है।

नर्सों के अन्तर्गत अपनी जीवन वृत्ति के प्रति विशेष महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। वे विवाह को अपनी जीवनवृत्ति के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में बाधक मानती है परन्तु कुछ नर्सें विवाह एवं परिवार को बसाना ही अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदारी व्यक्त करना समझती है। इस प्रकार के विचार वाली नर्सों के अनुसार विवाह एवं बच्चों के लालन–पालन की समस्या नर्सिंग के प्रत्येक पक्ष के प्रसार को प्रभावित करती है।

नर्सों के नर्सिंग व्यवसाय में प्रवेश के 'प्रेरकों' एवं नर्सिंग व्यवसाय में कार्यरत रहने के 'कारकों' के आधार पर नर्सों के चार प्रकार को स्पष्ट किया गया है।

(क) प्रसन्नतामूलक नर्सें जो 'परिवर्तित' सदृश लगती है ऐसी नर्सें इस व्यवसाय में नकारात्मक आधार पर प्रवेश लेती है परन्तु प्रवेश के उपरान्त इस व्यवसाय के प्रति उनमें प्यार होता है ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

(ख) दूसरे प्रकार की नर्स 'समर्पित' होती है जो नर्सिंग व्यवसाय में सकारात्मक आधार पर प्रवेश लेती है।

(ग) तृतीय प्रकार की नर्सें 'मोह मुक्तकार' कहलाती हैं जो नर्सिंग व्यवसाय की उच्च आकाँक्षाओं में भ्रमित होती हैं परन्तु इस व्यवसाय में नकारात्मक कारकों के कारण पड़ी रहती है।

(घ) चतुर्थ प्रकार की नर्स 'प्रवासी' कहलाती है जिनका इस व्यवसाय में अन्तिम प्रतिष्ठापन होता है । ऐसी नर्सें इस व्यवसाय में नकारात्मक आधार पर प्रवेश करती हैं और इन्हीं नकारात्मक कारकों के कारण इस व्यवसाय में पड़ी रहती है।

नर्सिंग जीवनवृत्ति का संस्कृति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। साधारणतया उस संस्कृति विशेष में जिसमें रोगियों एवं असहाय की सेवा को प्र्याप्त महत्व दिया जाता है, नर्सिंग व्यवसाय के लिए महिलाएँ अधिक आकर्षित होती हैं। यही कारण है भारतवर्ष में इस जीवनवृत्ति को अपनाने में ईसाई धर्मावलम्बियों का विशेष स्थान है। केरल की महिलाएँ नर्सिंग व्यवसाय में अन्य प्रदेशों की अपेक्षाकृत काफी आगे है।

आज भी भारत में नर्सिंग व्यवसाय के प्रति लोगों में वह आस्था नहीं है जिसकी अपेक्षा की जाती है। साधारणतया लोग नर्सिंग जीवनवृत्ति अपनाने वाले लोगों को बहुत ही हेय दृष्टि से देखते हैं। जिस प्रकार चिकित्सा व्यवसाय में विशिष्टीकरण का स्थान प्रमुख होता जा रहा है, चिकित्सालय संगठन की संकुलता बढ़ती जा रही है, नर्सों का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खन्ना एस०के० तथा दास (1990) : नर्सेस एवं उनका सामाजिक व्यवसायिक पक्ष, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)।
2. डोर एस० (2004) : मेल नर्सेस, सिकिंग फुल होल्ड इन ए फैमीन वर्ल्ड, डब्लूडब्लू एक्सप्रेस हेल्थ केयर मैनेजमेन्ट डॉट कॉम।
3. जय लक्ष्मी डी० (1930) : नर्सेस रोल परफोरमेन्स, ऐ रिसर्च स्टडी द नर्सिंग जर्नल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
4. नेजीफर एम० हण्ट (1986) : नर्सिंग केयर प्लान्स, द नर्सिंग प्रोसेस एट वर्क, जॉन वीले एण्ड सन्स
5. शान्ता मोहन (1985) : स्ट्रट्स ऑफ नर्सेस इन इण्डिया, ए उत्पल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

*****